Vol. 2, No.3 (July 2013) P. 21-23 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

उच्च स्तरीय संगीत शिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रम में परिवर्तन की आवश्यकता

अंकिता मुखर्जी
शोध छात्रा
संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद
E mail: ankitamukherjee0109@gmail.com

व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में संगीत शिक्षा का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान होता है। संगीत कला शिक्षा से व्यक्ति की कलात्मकता जाँची जा सकती है। उसे विकसित किया जा सकता है। संगीत कला शिक्षा को समाज में बनाए रखना आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिकता और परिवर्तन मूलमंत्र होना चाहिए। आधुनिकता समय का प्रतिनिधित्व करती है और परिवर्तन जीवन के प्रवाह का। संगीत के क्रियात्मक एवं शास्त्र के क्षेत्र में समय–समय पर बदलाव होते रहे हैं। ये बदलाव ही विकास के द्योतक रहे हैं।

संगीत के उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रम की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। पठनीय सामग्री का सुव्यस्थित रूप ''पाठ्यक्रम'' कहलाता है। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वे सभी अनुभव आते हैं जिन्हें छात्र कक्षा के भीतर तथा कक्षा के बाहर प्राप्त करता है। इस प्रकार शिक्षा के उद्देश्यों तथा लक्ष्यों की पूर्ति में पाठ्यक्रम की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है।[1]

उच्च स्तरीय संगीत शिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रम का निर्माण शिक्षा के सामान्य तथा विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए होता है। विद्यार्थियों की रचनात्मक कार्यों में रूचि का विकास कैसे सम्भव है? उनका शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, नैतिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा व्यावसायिक विकास कैसे किया जा सकता है? पुरानी परिपाटी पर चलते आ रहे घिसे–पिटे पाठ्यक्रमों में नई पीढ़ी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन कैसे सम्भव है?[2] विश्वविद्यालयीय तथा उच्च शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों को अनुसंधानों एवं आविष्कारों की ओर प्रेरित करने में भी पाठ्यक्रम बड़ा सहायक सिद्ध हो सकता है। औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष शिक्षा, उदार एवं व्यावसायिक शिक्षा तथा शिक्षा के व्यक्तिगत एवं सामाजिक उद्देश्यों का सन्तुलन रखना भी एक अच्छे पाठ्यक्रम का लक्ष्य है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के व्यक्तित्व को विकसित करना और उसके व्यवहार में परिवर्तन लाना भी है।

पाठ्यक्रमों में परिवर्तन दो प्रकार का हो सकता है :–

(1) मात्रात्मक (2) गुणात्मक

मात्रात्मक परिवर्तन में पाठ्यक्रम को यथासम्भव छोटा बनाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए, जिससे छात्र सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को आत्मसात् कर सके और गुणात्मक परिवर्तन में पाठ्यक्रम की उन विशेषताओं को महत्व दिया जाना चाहिए, जो वर्तमान परिस्थितियों में संगीत छात्रों के लिए आर्थिक दृष्टि से भी लाभकारी हों, जिससे वे व्यावसायिक सफलता अर्जित कर सकें।[3]

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अवलोकन करें तो ज्ञात होगा कि संगीत का उद्देश्य एवं स्वरूप विदेशी आक्रमणों के कारण समय–समय पर बदलता रहा और आज अन्ततः संगीत पाठ्यक्रम के रूप में एक वैकल्पिक विषय के रूप में हमारे समक्ष है।[4] उच्चस्तरीय संगीत कला शिक्षा को और अधिक व्यावहारिक, वैज्ञानिक बनाने के लिए साथ ही अन्य व्यावहारिक पाठ्यक्रमों जैसे इंजीनियरिंग, मेडिकल या सूचना प्रौद्योगिकी की बराबरी के स्तर पर लाने के लिए हमें मौजूदा संगीत कला पाठ्यक्रमों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है जो आज के

बदलते परिदृश्य में मात्र एक कलाकार बनाने के अतिरिक्त सामाजिक व्यवस्था और व्यवसायोन्मुख दृष्टिकोण के साथ एकीकृत हो सके।

युग की परिवर्तित परिस्थतियों के अनुरूप आज संगीत शिक्षा के सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम की परिकल्पना को परिवर्तित करने की नितान्त आवश्यकता है। यह परिवर्तन कई स्तरों पर किया जा सकता है। इसके द्वारा विश्वविद्यालय के संगीत विभाग द्वारा नवीन पाठ्यक्रमों के लिए योजना बनाना तथा उनमें प्रयोगों को सम्भव बनाना होगा।

आज छात्रों में शास्त्रीय संगीत के प्रति उदासीनता का भाव है। यद्यपि इस उदासीनता के अनेक कारण हो सकते हैं। किन्तु मूल कारण यह है कि छात्र जिस प्रकार के संगीत के आदी है, उनका वर्तमान पाठ्यक्रमों में उल्लेख तक नहीं है। हमारा मानना है कि शास्त्रीय संगीत का विकास लोकप्रिय संगीत से ही हुआ है, इसलिए संगीत शिक्षण में एक ऐसा सेतु होना चाहिए जो अपने समय के लोकप्रिय संगीत को शास्त्रीय संगीत से जोड़ सके। इसके लिए ऐसी गतिविधियों का समायोजन पाठ्यक्रम में होना चाहिए जो लोकप्रिय संगीत का प्रतिनिधित्व करती हैं।[5]

संगीत शिक्षा के पाठ्यक्रम में शास्त्रीय संगीत के शिक्षण के साथ–साथ विद्यार्थियों को उनकी योग्यता के आधार पर संगीत निर्देशन, फिल्म संगीत, वृन्दगान, वाद्यवृन्द और विभिन्न वाद्यों पर संगीत तथा सांगीतिक रचना करने की प्रविधि का ज्ञान भी दिया जाना चाहिए ताकि वे अपना जीवन निर्वाह अच्छी प्रकार से कर सकें। पाठ्यक्रम में आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के माध्यम से संगीत के विभिन्न प्रयोगों के आवश्यक ज्ञान के साथ–साथ रिकार्डिंग विषयक जानकारी भी विस्तार के साथ दी जा सकती है। वाद्यों का निर्माण तथा उनकी मरम्मत करने की तकनीक आदि विषयों को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है।[6]

छोटे–छोटे विज्ञापनों में किस प्रकार संगीत–धुनों का प्रयोग किया जाता है तथा वृत्त चित्रों का आलेखन और उनके संगीत का निर्माण कैसे किया जा सकता है यह सिखाया जा सकता है। सभी स्तरों पर पाठ्यक्रमों में एकरूपता का होना श्रेयस्कर है। सभी विश्वविद्यालयों का संगीत का पाठ्यक्रम एक समान होना चाहिए ताकि विभिन्न विश्वविद्यालयों से उत्तीर्ण हुए विद्यार्थियो की योग्यता का परीक्षण एक ही मानदण्ड के अनुसार किया जा सके।[7]

वर्तमान में चल रहे सभी पाठ्यक्रम राग–शिक्षण पर ज़ोर देते हैं। किसी शैली विशेष में विद्यार्थियों की रूचि स्वर, ज्ञान, अभ्यास एवं शास्त्र–पक्ष आदि पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया गया है। इन बातों को पाठ्यक्रम में शामिल करने से विद्यार्थी को उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् आर्थिक समस्या से जूझना नहीं पड़ेगा और वह स्वतंत्र रूप से अपना व्यवसाय चलाकर सफलतापूर्वक अपनी जीविका का निर्वाह कर सकेगा।[8]

आज संगीत कला से सम्बन्धित नये–नये रोजगार के अवसर उपलब्ध है किन्तु पेशेवर और कुशल कलाकारों की कमी है। इसलिए आज विश्वविद्यालयों द्वारा दी जाने वाली संगीत कला शिक्षा पर बड़ी जिम्मेदारी है कि संगीत कला के क्षेत्र में उच्च शिक्षा हासिल करने वाले छात्रों को इस स्तर तक पहुँचाया जाए कि वे बदलती प्रवृत्तियों के साथ आने वाली चुनौतियों का सामना आत्मविश्वास के साथ करने में सक्षम हों।

संगीत से संबंधित अनेक व्यवसाय समाज में उपलब्ध है, बस केवल आवश्यकता है उनको पाठ्यक्रम का विषय बनाने की।[9] यदि संगीत का पाठ्यक्रम मनोवैज्ञानिक व सामाजिक आधार देकर बनाया जायेगा तब ज्यादा से ज्यादा लोग संगीत विषय को अपनायेंगे। जिस प्रकार माता–पिता अपने बच्चों को इंजीनियर, डॉक्टर या प्रशासनिक अधिकारी बनाते हैं, उसी प्रकार संगीत शिक्षा के सम्बन्ध में भी अपना मानस बनायेगें, परन्तु आवश्यकता है कि हम अपने संगीत पाठ्यक्रम को सुधारें और उसको सामाजिक व मनौवैज्ञानिक आधार प्रदान करें।

संदर्भः

1– संगीत की उच्चस्तरीय शिक्षण प्रणाली, डॉ0 पुष्पेन्द्र शर्मा – पृ0 95
2– वही0 – पृ0 95
3– संगीत पत्रिका, सित0 2009 – पृ0 06
4– संगीत के विविध आयाम, डॉ0 कुमार ऋषितोष – पृ0 119
5– संगीत पत्रिका, सित0 2009 – पृ0 08
6– संगीत की उच्चस्तरीय प्रणाली, डॉ0 पुष्पेन्द्र शर्मा – पृ0 101
7– वही0 पृ0 – 102–03
8– संगीत कला विहार – मार्च 2011 पृ0 15
9– शास्त्रीय संगीत शिक्षाः समस्याएँ एवं समाधान, डॉ0 अलकनंदा पलनीटकर एवं डॉ0 हरि सेन, पृ0 – 54